

## EDITORIAL

# Hail the Historic Action of Working Class

The Indian working Class has once again proved its mettle and responsibility on Sep2 by forging their class unity and stood like rock in the platform of industrial strike action throughout the country. This strike is 17th of its type against the Neo Liberal policies of the successive Governments. The present Govt is in great hurry to dismantle the entire public sector and want to be friendly with some selected corporate giants. The recent launch of Reliance Jio is a definite proof for our countrymen that the Govt is caring more Private telecom giants than PSU s like BSNL.

The Sep.2 strike was wide spread in almost all the industries right from Banking, Insurance, Coal, Oil, BHEL, Steel, port and Dock to Telecom, postal, Defence, Govt employees of various states. The Central Trade Unions are reporting more than 10 crore workers of GOVT, PSU, Co-operatives, Privates, unorganized and rural agri workers participated and made the strike biggest ever. We salute all those participated and congratulate specially our telecom comrades for this brave act of fighting anti labour - anti people policies of the existing Govt.

The Government's last minute cheap tactics of breaking the strike using non striking unions was completely failed. The Group of Ministers committee set up for settling the demands was not at all met during the last 12 months and their last minute offer of Rs 9100 as minimum wage against the demand of Rs 18000 was not accepted by the striking unions.

According to our past experiences that these kinds of strike and sacrifices of working class

would never go in vain. They will definitely give positive results. Even raising of EPS pension minimum to RS 1000, Enhancing Bonus calculation from Rs 3500 to 7000 , Maternity leave for non- governmental female labours from 12 weeks to 26 weeks all because of these strikes only. Lakhs and Lakhs of workers got benefitted because of these improvements, though little in measure. This strike will also definitely will bring some relief to lakhs of contract labourers exploited everywhere.

In Telecom the strike was good in many circles and our comrades participated in mass rallies in many places. The apprehension of NITI AYOg's recommendation of strategic partner and privatizing PSUs made our workers to join the mainstream strike. At present more than 40000 BSNL recruited youngsters are with us. Their EPF is at stake and the GOVT. is transferring their hard earned money to the share market. Their EPS pension is very meager. We are fighting for a better pension scheme for them. Our pension problem of 60% is settled but next wage revision and the subsequent pension revision are some of the major issues before us. BSNL is now in the revival mood and every one is appreciating for the turn around.

But unless we turn the company to the direction of net profit, the task of wage negotiation will become tough. NFTE CHQ will strive its best to steer the course of action to the better direction for the growth of the company as well workers. We once again congratulate all the comrades and leaders participated and made the strike a historic one.



## श्रमिकों के ऐतिहासिक संघर्ष को सलाम

गत 2 सितम्बर 2016 को एक बार फिर हिन्दुस्तान की मेहनकश आवाम ने अपने वर्गीय एकता को कायम रखते हुए एक दिवसीय औद्योगिक हड़ताल में चङ्गान की तरह खड़े होकर अपनी साहस और दायित्व का परचम लहराया, बदलते हुए सरकार के नव उदारवादी नीतियों एवं प्रवृत्ति के खिलाफ यह सत्रहवीं हड़ताल है। वर्तमान सरकार सभी लोक उपक्रम को समाप्त करने की जल्दबाजी में है तथा कुछ चुनिंदा औद्योगिक घरानों से मित्रवत संबंध रखती है। तत्कालिक रिलायन्स जीयो का पदार्पण से यह स्पष्ट है कि सरकार बीएसएनएल से ज्यादा निजी दूरसंचार दैत्यों का ज्यादा ख्याल रखती है।

दो सितंबर की हड़ताल में सभी उद्योगों यथा, बैंकिंग, बीमा, कोयला, तेल, भेल, स्टील, बंदरगाह, सहित दूरसंचार (बीएसएनएल) डाक, डिफेन्स तथा अनेकों राज्यों के सरकारी कर्मचारियों ने व्यापक रूप से भागीदारी दी है। केंद्रीय श्रमिक संघों में सभी संगठित एवं असंगठित क्षेत्रों के लगभग 18 करोड़ श्रमिकों की भागीदारी का दावा किया है। हम उन तमाम श्रमिक साथियों को सलाम करते हैं तथा बीएसएनएल कर्मियों को विशेष बधाई देते हैं जिन्होंने पूरे जोश के साथ सरकार के श्रमिक विरोधी एवं जन विरोधी नीतियों के खिलाफ एकजुट होकर शंखनाद में शामिल हुए हैं। सरकार द्वारा कुछ अवांछित श्रम विरोधी यूनियनों के माध्यम से हड़ताल को तोड़ने का प्रयास पूर्णरूपेण ध्वस्त हो गया। पिछले बारह महीने में मुद्दों के समाधान के लिए गठित केंद्रीय मंत्रियों की समिति एक बार भी मिल नहीं पाई तथा अंतिम क्षण में उनके द्वारा प्रस्तावित 9100रु. का न्यूनतम वेतन संघर्षरत यूनियनों द्वारा अमान्य कर दिया गया।

हमारा अनुभव रहा है कि श्रमिकों द्वारा पूर्व में इस तरह का किया गया संघर्ष एवं त्याग कभी बेकार नहीं गया। इ.पी.एस. पेंशन की सीमा बढ़ाकर एक हजार रुपये करना, बोनस का आकलन 3500 रुपये से बढ़ाकर सात हजार रुपये करना, गैर-सरकारी महिला कर्मियों के लिए मातृत्व अवकाश बाहर सप्ताह से बढ़ाकर 26 सप्ताह करना इस हड़ताल के कारण ही संभव हुआ है। लाखों कर्मचारी इससे लाभान्वित होंगे हालांकि यह छोटी उपलब्धि भारी अपेक्षा को पूरी करेगी।

बीएसएनएल के अधिकांश सर्किलों में हड़ताल का व्यापक प्रभाव रहा। तथा बहुत स्थानों पर हमारे साथियों ने आम रैली में भी भाग लिया। नीति आयोग द्वारा लोक उपक्रम में स्ट्रैटजिक पार्टनर की व्यवस्था की अनुशंसा से कर्मचारी भयग्रस्त हुए और हड़ताल में शामिल हुए। वर्तमान में बी.एस.एन.एल. में लगभग चालीस हजार युवा साथी भर्ती हुए हैं उनके इ.पी.एफ दाव पर लगे हैं तथा पेंशन के लिए बहुत कम रकम का प्रावधान है।

हम अच्छे पेंशन के लिए लगातार संघर्षरत हैं। हमारा पेंशन मद में 60/40 का अनुपात समाप्त कर दिया गया है, परन्तु आगामी वेतन-पुनर्निर्धारण और उस पर पेंशन की पुनर्गनना एक भारी चुनौती हमारे सामने हैं। बीएसएनएल अभी सुधार की ओर है और सबों ने इसकी प्रशंसा की है परन्तु जब तक हम कम्पनी को शुद्ध लाभ की दिशा में नहीं ले जाते, अच्छे वेतन पुनरीक्षण कठिन है। एनएफटीई केंद्रीय मुख्यालय कम्पनी एवं कर्मचारियों के सुनहरे भविष्य के लिए लगातार कठिनबद्ध होकर प्रयास कर रही हैं। हम एक बार पुनः उन सभी साथियों को बधाई देते हैं जिन्होंने हड़ताल में शामिल होकर इसे ऐतिहासिक रूप दिया है।

